



मधुबन

ओम् शान्ति

अंक 401 दिसम्बर 2025



पत्र-पुष्प



निमित्त टीचर्स तथा सर्व ब्राह्मण कुल भूषण भाई-बहनों प्रति शुभ प्रेरणाएं

“अशरीरीपन के अभ्यास द्वारा कर्मातीत स्थिति का अनुभव करो”

(याद पत्र 21-11-2025)

परमप्रिय अव्यक्तमूर्त मात-पिता बापदादा के अति लाडले, कर्म के किसी भी बंधन के स्पर्श से न्यारे, सदा साक्षी बन न्यारी और प्यारी स्थिति में रह कर्म करने वाली, अलौकिक व श्रेष्ठ जीवन वाली निमित्त टीचर्स बहिनें तथा देश विदेश के सर्व ब्राह्मण कुल भूषण भाई बहिनें,

ईश्वरीय स्नेह सम्पन्न मधुर याद स्वीकार करना जी।

बाद समाचार - वर्तमान समय जैसी परिस्थितियां आ रही हैं, प्रकृति की समस्याएं आ रही हैं। ऐसे समय पर जैसे बाबा कहते हैं बच्चे, विकर्माजीत, कर्मातीत, अशरीरी स्थिति की आवश्यकता है, इसका जितना अभ्यास करके अपनी श्रेष्ठ स्थिति बनाई है, उतना अनेक प्रकार की परिस्थितियों के समय मदद अवश्य मिलती है लेकिन अभ्यास बहुतकाल का चाहिए। मैंने पहले जो अभ्यास किया था, आज प्रकृति जब परीक्षा ले रही है, ऐसे समय पर उस अभ्यास से बहुत मदद मिल रही है। परीक्षा के समय अपनी स्थिति बनाये रखना, डबल लाइट रहना, वर्तमान समय इसकी ही आवश्यकता है। ऐसे लगता है कि यह भी ड्रामा की सीन है। खेल लगता है, कोई भी बात भारी नहीं लगती, हल्के होकर ड्रामा के हर पार्ट को समझते, आगे बढ़ते रहते हैं। बाबा भी कहते बच्चे, अभी तो कर्मातीत बनने की धुन लगाओ। इसके लिए कर्मों के हिसाब-किताब से, सेवा के बंधन से भी बंधना नहीं है। बन्धनमुक्त बन सेवा करनी है, हृद की रॉयल इच्छाओं से भी मुक्त रहना है। देह का बन्धन, देह के सम्बन्ध का बन्धन, सेवा में स्वार्थ - यह सब बन्धन कर्मातीत बनने में विघ्न डालते हैं। सेवाओं का विस्तार भल कितना भी बढ़ता जाए लेकिन विस्तार में सार भूल न जाये। जैसे ब्रह्मा बाप ने साकार जीवन में कर्मातीत होने के पहले न्यारे और प्यारे रहने का अभ्यास किया। सेवा को वा कोई कर्म को छोड़ा नहीं लेकिन न्यारे हो लास्ट दिन भी सेवा समाप्त की, ऐसे हमें भी फालो फादर करना है। कर्म करते तन का भी हल्कापन, मन की स्थिति में भी हल्कापन। कर्म की रिजल्ट मन को खींच न ले। मालिक होकर कर्म कराने वाला करा रहा है और करने वाले निमित्त बनकर कर रहे हैं - इस अभ्यास से सम्पन्न वा कर्मातीत सहज ही बन जायेंगे।

तो बोलो, हमारी मीठी मीठी बहनें वा भाई ऐसा ही अभ्यास कर रहे हो ना! मैं अभी कुछ समय के लिए अमेरिका में हूँ। भारत की सेवाओं के अनेकानेक समाचार सुनते दिल ही दिल में बाबा के और आप सब अथक सेवाधारी भाई बहिनों के गुणगान करती हूँ। कैसे बाबा अपने बच्चों को निमित्त बनाए बेहद कार्य करवा रहे हैं। चारों तरफ बहुत अच्छी सेवायें हो रही हैं। मधुबन की रौनक तो सदा निराली रहती ही है। बापदादा की इस अलौकिक मिलन महफिल में भी चारों ओर के अनेक बच्चे पहुंच जाते हैं। बाबा सूक्ष्म वतन से भी सभी बच्चों को अपनी उपस्थिति का अनुभव कराते, हर बच्चे को सब खजानों से भरपूर कर रहे हैं। यह भी वन्दरफुल बाबा की अलौकिक पालना है, जिसका आप सब जरूर अनुभव करते होंगे।

अच्छा - सभी को बहुत-बहुत दिल से स्नेह भरी याद...

ईश्वरीय सेवा में,

बी के मोहिनी

मुख्य प्रशासिका, ब्रह्माकुमारीज





ये अव्यक्त इशारे



अब सम्पन्न वा कर्मातीत बनने की धुन लगाओ

1) निराकारी स्वरूप की मुख्य शिक्षा का वरदान है “कर्मातीत भव”। आकारी स्वरूप अथवा फरिश्तेपन का वरदान है डबल-लाइट भव! डबल लाइट अर्थात् सर्व कर्म-बन्धनों से हल्के और लाइट अर्थात् सदा प्रकाश-स्वरूप में स्थित रहने वाले। ऐसे डबल लाइट रहने वाले सहज कर्मातीत स्थिति को प्राप्त कर सकते हैं। तो सेवाओं में आते अभी यह धुन लगाओ कि मुझे सम्पन्न वा कर्मातीत बनना ही है।

2) कर्मातीत का अर्थ यह नहीं है कि कर्म से अतीत हो जाओ। कर्म से न्यारे नहीं, कर्म के बन्धन में फँसने से न्यारे - इसको कहते हैं कर्मातीत। कर्मयोग की स्थिति कर्मातीत स्थिति का अनुभव कराती है। यह कर्मयोगी स्थिति अति प्यारी और न्यारी स्थिति है, इससे कोई कितना भी बड़ा कार्य मेहनत का हो लेकिन ऐसे लगेगा जैसे काम नहीं कर रहे हैं लेकिन खेल कर रहे हैं।

3) कर्मातीत का अर्थ ही है - सर्व प्रकार के हृद के स्वभाव-संस्कार से अतीत अर्थात् न्यारा। हृद है बन्धन, बेहद है निर्बन्धन। ब्रह्मा बाप समान अब हृद के मेरे-मेरे से मुक्त होने का अर्थात् कर्मातीत होने का अव्यक्ति दिवस मनाओ, इसी को ही स्नेह का सबूत कहा जाता है।

4) कर्मातीत स्थिति को प्राप्त करने के लिए सदा साक्षी बन कार्य करो। साक्षी अर्थात् सदा न्यारी और प्यारी स्थिति में रह कर्म करने वाली अलौकिक आत्मा हूँ, अलौकिक अनुभूति करने वाली, अलौकिक जीवन, श्रेष्ठ जीवन वाली आत्मा हूँ - यह नशा रहे। कर्म करते यही अभ्यास बढ़ाते रहो तो कर्मातीत स्थिति को प्राप्त कर लेंगे।

5) कर्मातीत बनने के लिए अशरीरी बनने का अभ्यास बढ़ाओ। शरीर का बंधन, कर्म का बंधन, व्यक्तियों का बंधन, वैभवों का बंधन, स्वभाव-संस्कारों का बंधन... कोई भी बंधन अपने तरफ आकर्षित न करे। यह बंधन ही आत्मा को टाइट कर देता है, इसके लिए सदा निर्लिप्त अर्थात् न्यारे और अति प्यारे बनने का अभ्यास करो।

6) कर्मातीत बनने के लिए कर्मों के हिसाब-किताब से मुक्त बनो। सेवा में भी सेवा के बंधन में बंधने वाले सेवाधारी नहीं। बन्धनमुक्त बन सेवा करो अर्थात् हृद की रॉयल इच्छाओं से

मुक्त बनो। जैसे देह का बन्धन, देह के सम्बन्ध का बन्धन, ऐसे सेवा में स्वार्थ - यह भी बन्धन कर्मातीत बनने में विघ्न डालता है। कर्मातीत बनना अर्थात् इस रॉयल हिसाब-किताब से भी मुक्त।

7) बहुतकाल अचल-अडोल, निर्विघ्न, निर्बन्धन, निर्विकल्प, निर-विकर्म अर्थात् निराकारी, निर्विकारी और निरहंकारी स्थिति में रहो तब कर्मातीत बन सकेंगे। सेवा का विस्तार भल कितना भी बढ़ाओ लेकिन विस्तार में जाते सार की स्थिति का अभ्यास कम न हो, विस्तार में सार भूल न जाये। खाओ-पियो, सेवा करो लेकिन न्यारेपन को नहीं भूलो।

8) कर्मातीत स्थिति का अनुभव करने के लिए ज्ञान सुनने सुनाने के साथ अब ब्रह्मा बाप समान न्यारे अशरीरी बनने के अभ्यास पर विशेष अटेंशन दो। जैसे ब्रह्मा बाप ने साकार जीवन में कर्मातीत होने के पहले न्यारे और प्यारे रहने के अभ्यास का प्रत्यक्ष अनुभव कराया। सेवा को वा कोई कर्म को छोड़ा नहीं लेकिन न्यारे हो लास्ट दिन भी बच्चों की सेवा समाप्त की, ऐसे फालो फादर करो।

9) कर्मातीत अर्थात् कर्म के किसी भी बंधन के स्पर्श से न्यारे। ऐसा ही अनुभव बढ़ता रहे। कोई भी कार्य स्पर्श न करे और करने के बाद जो रिजल्ट निकलती है उसका भी स्पर्श न हो, बिल्कुल ही न्यारापन अनुभव होता रहे। जैसेकि दूसरे कोई ने कराया और मैंने किया। निमित्त बनने में भी न्यारापन अनुभव हो। जो कुछ बीता, फुलस्टाप लगाकर न्यारे बन जाओ।

10) कर्म करते तन का भी हल्कापन, मन की स्थिति में भी हल्कापन। कर्म की रिजल्ट मन को खींच न ले। जितना ही कार्य बढ़ता जाये उतना ही हल्कापन भी बढ़ता जाये। कर्म अपनी तरफ आकर्षित नहीं करे लेकिन मालिक होकर कर्म कराने वाला करा रहा है और करने वाले निमित्त बनकर कर रहे हैं - यह अभ्यास बढ़ाओ तो सम्पन्न कर्मातीत सहज ही बन जायेंगे।

11) कर्मातीत बनने के लिए चेक करो कहाँ तक कर्मों के बन्धन से न्यारे बने हैं? लौकिक और अलौकिक, कर्म और सम्बन्ध दोनों में स्वार्थ भाव से मुक्त कहाँ तक बने हैं? जब कर्मों के हिसाब-किताब वा किसी भी व्यर्थ स्वभाव-संस्कार के

वश होने से मुक्त बनेंगे तब कर्मातीत स्थिति को प्राप्त कर सकेंगे। कोई भी सेवा, संगठन, प्रकृति की परिस्थिति स्वस्थिति वा श्रेष्ठ स्थिति को डगमग न करे। इस बंधन से भी मुक्त रहना ही कर्मातीत स्थिति की समीपता है।

12) कर्मातीत अर्थात् कर्म के वश होने वाला नहीं लेकिन मालिक बन, अर्थॉरिटी बन कर्मैन्द्रियों के सम्बन्ध में आये, विनाशी कामना से न्यारा हो कर्मैन्द्रियों द्वारा कर्म कराये। आत्मा मालिक को कर्म अपने अधीन न करे लेकिन अधिकारी बन कर्म कराता रहे। कराने वाला बन कर्म कराना - इसको कहेंगे कर्म के सम्बन्ध में आना। कर्मातीत आत्मा सम्बन्ध में आती है, बन्धन में नहीं।

13) पिछले कर्मों के हिसाब-किताब के फलस्वरूप तन का रोग हो, मन के संस्कार अन्य आत्माओं के संस्कारों से टक्कर भी खाते हों लेकिन कर्मातीत, कर्मभोग के वश न होकर मालिक बन हिसाब चुकतू करावे। कर्मयोगी बन कर्मभोग चुकतू करना - यह है कर्मातीत स्थिति की निशानी। प्रैक्टिस करो अभी-अभी कर्मयोगी, अभी-अभी कर्मातीत स्टेज।

14) जैसे आपकी रचना कछुआ सेकेण्ड में सब अंग समेट लेता है। समेटने की शक्ति रचना में भी है। आप मास्टर रचना समेटने की शक्ति के आधार से सेकेण्ड में सर्व संकल्पों को समाकर एक संकल्प में स्थित हो जाओ। जब सर्व कर्मैन्द्रियों के कर्म की स्मृति से परे एक ही आत्मिक स्वरूप में स्थित हो जायेंगे तब कर्मातीत अवस्था का अनुभव होगा।

15) जैसे देखना, सुनना, सुनाना - ये विशेष कर्म सहज अभ्यास में आ गया है, ऐसे ही कर्मातीत बनने की स्टेज अर्थात् कर्म को समेटने की शक्ति से अकर्मि अर्थात् कर्मातीत बन जाओ। एक है कर्म-अधीन स्टेज, दूसरी है कर्मातीत अर्थात् कर्म-अधिकारी स्टेज। तो चेक करो मुझ कर्मैन्द्रिय-जीत, स्वराज्यधारी राजाओं की राज्य कारोबार ठीक चल रही है?

16) हर ब्राह्मण बाप-सामन चैतन्य चित्र बनो, लाइट और माइट हाउस की झाँकी बनो। संकल्प शक्ति का, साइलेन्स का भाषण तैयार करो और कर्मातीत स्टेज पर वरदानी मूर्त का पार्ट बजाओ तब सम्पूर्णता समीप आयेगी। फिर सेकेण्ड से भी जल्दी जहाँ कर्तव्य कराना होगा वहाँ वायरलेस द्वारा डायरेक्शन दे सकेंगे। सेकेण्ड में कर्मातीत स्टेज के आधार से संकल्प किया और जहाँ चाहें वहाँ वह संकल्प पहुंच जाए।

17) महारथियों का पुरुषार्थ अभी विशेष इसी अभ्यास का है। अभी-अभी कर्मयोगी, अभी-अभी कर्मातीत स्टेज। पुरानी दुनिया में पुराने अन्तिम शरीर में किसी भी प्रकार की व्याधि अपनी श्रेष्ठ स्थिति को हलचल में न लाये। स्व-चिन्तन, ज्ञान-

चिन्तन, शुभचिन्तक बनने का चिन्तन ही चले तब कहेंगे कर्मातीत स्थिति।

18) जैसे साकार में आने जाने की सहज प्रैक्टिस हो गई है, वैसे आत्मा को अपनी कर्मातीत अवस्था में रहने की भी प्रैक्टिस हो। अभी-अभी कर्मयोगी बन कर्म में आना, कर्म समाप्त हुआ फिर कर्मातीत अवस्था में रहना, इसका अनुभव सहज होता जाए। सदा लक्ष्य रहे कि कर्मातीत अवस्था में रहना है, निमित्त मात्र कर्म करने के लिए कर्मयोगी बने फिर कर्मातीत।

19) जैसे कर्म में आना स्वाभाविक हो गया है वैसे कर्मातीत होना भी स्वाभाविक हो जाए। कर्म भी करो और याद में भी रहो। जो सदा कर्मयोगी की स्टेज पर रहते हैं, वह सहज ही कर्मातीत हो सकते हैं। जब चाहे कर्म में आयें और जब चाहें न्यारे बन जायें, यह प्रैक्टिस कर्म के बीच-बीच में करते रहो।

20) जैसे साकार में देखा लास्ट कर्मातीत स्टेज का पार्ट सिर्फ ब्लैसिंग देने का रहा, बेलेन्स की भी विशेषता और ब्लैसिंग की भी कमाल रही। ऐसे फालो फादर। सहज और शक्तिशाली सेवा यही है। अब विशेष आत्माओं का पार्ट है ब्लैसिंग देने का। चाहे नयनों से दो, चाहे मस्तकमणी द्वारा।

21) जैसे बाप के लिए सबके मुख से एक ही आवाज निकलती है-“मेरा बाबा”। ऐसे आप हर श्रेष्ठ आत्मा के प्रति यह भावना हो, महसूसता हो। हरेक से मेरे-पन की भासना आये। हरेक समझे कि यह मेरे शुभचिन्तक सहयोगी सेवा के साथी हैं, इसको कहा जाता है - बाप सामान, कर्मातीत स्टेज के तख्तनशीन।

22) अब सेवा के कर्म के भी बन्धन में नहीं आओ। हमारा स्थान, हमारी सेवा, हमारे स्टूडेंट, हमारी सहयोगी आत्मायें, यह भी सेवा के कर्म का बन्धन है, इस कर्मबन्धन से कर्मातीत। तो कर्मातीत बनना है और “यह वही हैं, यही सब कुछ हैं,” यह महसूसता दिलाए आत्माओं को समीप ठिकाने पर लाना है।

23) अपनी हर कर्मैन्द्रिय की शक्ति को इशारा करो तो इशारे से ही जैसे चाहो वैसे चला सको। ऐसे कर्मैन्द्रिय जीत बनो तब फिर प्रकृतिजीत बन कर्मातीत स्थिति के आसनधारी सो विश्व राज्य अधिकारी बनेंगे। हर कर्मैन्द्रिय “जी हजूर” “जी हाज़िर” करती हुई चले। आप राज्य अधिकारियों का सदा स्वागत अर्थात् सलाम करती रहे तब कर्मातीत बन सकेंगे।

24) जब कर्मातीत स्थिति के समीप पहुंचेंगे तब किसी भी आत्मा तरफ बुद्धि का झुकाव, कर्म का बंधन नहीं बनायेगा। कर्मातीत अर्थात् सर्व कर्म बन्धनों से मुक्त, न्यारे बन, प्रकृति द्वारा निमित्त-मात्र कर्म कराना। कर्मातीत अवस्था का अनुभव

करने के लिए न्यारे बनने का पुरुषार्थ बार-बार नहीं करना पड़े, सहज और स्वतः ही अनुभव हो कि कराने वाला और करने वाली यह कर्मेन्द्रियाँ हैं ही अलग।

25) अन्तःवाहक स्थिति अर्थात् कर्मबन्धन मुक्त कर्मातीत स्थिति का वाहन अर्थात् अन्तिम वाहन, जिस द्वारा ही सेकण्ड में साथ में उड़ेंगे। इसके लिए सर्व हदों से पार बेहद स्वरूप में, बेहद के सेवाधारी, सर्व हदों के ऊपर विजय प्राप्त करने वाले विजयी रत्न बनो तब ही अन्तिम कर्मातीत स्वरूप के अनुभवी स्वरूप बनेंगे।

26) आवाज से परे अपनी श्रेष्ठ स्थिति में स्थित हो जाओ तो सर्व व्यक्त आकर्षण से परे शक्तिशाली न्यारी और प्यारी स्थिति बन जायेगी। एक सेकण्ड भी इस श्रेष्ठ स्थिति में स्थित होंगे तो इसका प्रभाव सारा दिन कर्म करते हुए भी स्वयं में विशेष शान्ति की शक्ति अनुभव करेंगे, इसी स्थिति को कर्मातीत स्थिति, बाप समान सम्पूर्ण स्थिति कहा जाता है।

27) कर्मातीत स्थिति को पाने के लिए विशेष स्वयं में समेटने और समाने की शक्ति धारण करना आवश्यक है। कर्मबन्धनी आत्माएं जहाँ हैं वहाँ ही कार्य कर सकती हैं और कर्मातीत आत्मायें एक ही समय पर चारों ओर अपना सेवा का पार्ट बजा सकती हैं क्योंकि कर्मातीत हैं। उनकी स्पीड बहुत तीव्र होती है, सेकण्ड में जहाँ चाहे वहाँ पहुँच सकती है, तो इस अनुभूति को बढ़ाओ।

28) जब मन-बुद्धि कर्म में बहुत बिज़ी हो, उस समय डायरेक्शन दो फुलस्टॉप। कर्म के भी संकल्प स्टॉप हो जाएं। यह प्रैक्टिस एक सेकण्ड के लिये भी करो लेकिन अभ्यास करते जाओ, क्योंकि अन्तिम सर्टीफिकेट एक सेकण्ड के फुलस्टॉप लगाने पर ही मिलना है। सेकण्ड में विस्तार को समा लो, सार स्वरूप बन जाओ, यही अभ्यास कर्मातीत बनायेगा।

29) जैसे कोई मशीनरी को सेट किया जाता है तो एक बार सेट करने से फिर आटोमेटिकली चलती रहती है। इस रीति से अपनी सम्पूर्ण स्टेज वा बाप के समान स्टेज वा कर्मातीत स्थिति की स्टेज के सेट को ऐसा सेट कर दो जो फिर संकल्प, शब्द वा कर्म उसी सेटिंग के प्रमाण आटोमेटिक चलते रहें।

30) कर्मों की गुह्य गति को जानकर अर्थात् त्रिकालदर्शी बनकर हर कर्म करो तब ही कर्मातीत बन सकेंगे। यदि छोटी-छोटी गलतियाँ संकल्प रूप में भी हो जाती हैं तो उसका भी हिसाब-किताब बहुत कड़ा बनता है इसलिए छोटी गलती भी बड़ी समझनी है क्योंकि अभी सम्पूर्ण स्थिति के समीप आ रहे हो।

31) कर्मातीत अर्थात् कर्म के अधीन नहीं, कर्मों के परतन्त्र नहीं। स्वतन्त्र हो कर्मेन्द्रियों द्वारा कर्म कराओ। जो गायन है कि करते हुए अकर्ता, सम्पर्क-सम्बन्ध में रहते हुए कर्मातीत, क्या ऐसी स्टेज रहती है? कोई भी लगाव न हो और सर्विस भी लगाव से न हो लेकिन निमित्त भाव से हो; इससे सहज ही कर्मातीत बन जायेंगे।

(त्रिमूर्ति दादियों द्वारा मिली हुई अनमोल शिक्षायें)

शिवबाबा याद है ?

ओम् शान्ति

16-11-2025

मधुबन

गुल्जार दादी जी की अनमोल शिक्षायें

**“प्रकृतिजीत बन मन्सा द्वारा सकाश देने की सेवा करो,
मन को बिजी रखो तो व्यर्थ से छूट जायेंगे”**

(23-07-11)

हम सबके मन में यही संकल्प है कि हमें बाबा के हाथ में हाथ दे करके साथ चलना है। बाबा जैसा बनना है। हम सबने बाबा से वायदा किया है, कि बाबा आपके साथ ही चलना है, तो बाबा जैसा समान बनना है। तो चेक करो कि हम बाबा जैसा कहाँ तक बना हूँ? बाबा क्या है और हम क्या हैं? बाबा से मिलन मनाते हैं तो बाबा के सूरत से, मूरत से बाबा के गुण, बाबा की शक्तियाँ सब दिखाई देती हैं। उनको देख करके हमको अपने आपको चेक करना है, जब बाबा हमारे सामने आता है तो वही दर्पण बन जाता है।

बाबा सभी बच्चों को अपने समान बनाने चाहता है। तो समान बनने की बहुत सहज युक्ति है – कोई भी कार्य करने के पहले चेक कर लो कि यह बाबा ने किया? मानो मन्सा संकल्प है तो यह हमको करने के पहले चेक करना चाहिए कि हमारे संकल्प बाबा के समान हैं! बाबा जो कहते हैं बच्चे मन्सा सेवा करो तो हम उसी प्रमाण मन्सा सेवा करते हैं? बाबा की मन्सा में हम एक एक बच्चे के लिये बाबा के दिल में क्या है? जो कम पुरुषार्थी हैं उनके लिये भी बाबा को इतना ही प्यार है जितना औरों से है। तो कम

पुरुषार्थियों के लिए बाबा का प्यार भी है, रहम भी है। नम्बरवार तो सभी हैं ना, इसका ही यादगार माला है। पुरुषार्थी तो सभी हैं लेकिन नम्बरवार हो ही जाते हैं, तो कुछ भी कमी है उसके ऊपर रहम आता है या दूसरा कुछ आता है जो होना नहीं चाहिए?

बाबा ने हमारी अभी दो कमजोरियाँ सुनाई हैं, एक बाबा ने कहा जो मैंने कहा है सेकण्ड में बिन्दी लगाओ, बिन्दी बन जाओ और बिन्दी को देखो क्योंकि आगे चल करके ऐसा समय आने वाला है जो सेकण्ड में फुलस्टाप लगाने का अगर अभ्यास नहीं होगा तो हम उस पेपर में पास नहीं हो सकेंगे क्योंकि वह पेपर अचानक आना है। पेपर की डेट आउट नहीं होनी है, अचानक होना है। दूसरा उस समय हालतें ऐसी होगी जो आप पुरुषार्थ करो कि सेकण्ड में पुरुषार्थ करके बिन्दी लगा दूँ, तो वह समय ही नहीं होगा।

आजकल भाव-स्वभाव, पुराने संस्कार ही विघ्न डालते हैं और बाबा ने कहा कि संस्कार मिलन के रास की डेट फिक्स करो। तो उस डेट के लिये तैयार हो? अब बाबा का कहना और हमारा करना साथ-साथ होना चाहिए। मम्मा इसी विशेषता से नम्बरवन बनी। मम्मा कहती थी, बाबा ने कहा मम्मा ने किया, हमारे पुरुषार्थ में भी ऐसे ही अगर दो शब्द “कहा और किया”, यह हो जाये। तो नम्बर आगे हो जायेगा। इसके लिए रोज़ की मुरली अटेन्शन से पढ़ो, रोज़ की मुरली में चार ही सबजेक्ट बाबा बोल देता है - ज्ञान, योग, धारणा और सेवा। तो मुरली हमारे प्रति है। और हम भी ध्यान से मुरली पढ़ते वा सुनते हैं तो बाबा ने जो कहा है वो हमको करना है, बस। और कोई ज्यादा पुरुषार्थ है क्या? सहज चीज़ तो करना कोई मुश्किल नहीं होती है। मुश्किल तब होती है जब कोई न कोई संस्कार या कोई न कोई व्यर्थ संकल्प मन में आ जाता है या कुछ व्यर्थ देख लेते हैं तो वो दिल में छप जाता है।

अभी सभी एक सेकण्ड में बिन्दी बनो और बिन्दी लगाओ... सभी ने अभी यहाँ बैठे बैठे अपने को चेक किया होगा, अभी तो कोई काम नहीं है, अगर कोई से भाव-स्वभाव है तो अभी वो भी सामने नहीं है, खाली हैं, तो अभी अभ्यास किया, हो सकता है? अच्छा, सारे दिन में कितना बारी यह अभ्यास करते हो? इस अभ्यास को करने के लिये बैठने की बात नहीं है, चलते-फिरते भी तो बिन्दी लग सकती है। दूसरे को भी बिन्दी रूप में देख सकते हैं ना! इसमें टाइम कितना लगता है? कुछ नहीं। सोच-विचार में लाओ कि मैं बिन्दी हूँ, यह भी बिन्दी है वो भी बिन्दी है तो इसमें क्या टाइम लगता है। और चलते फिरते भी या मैं समझती हूँ, जैसे आप कोई काम शुरू करते हो भिन्न-भिन्न काम तो करने पड़ते हैं ना! वो सब करते भी हमारी सोच वा नज़र आत्मा पर ही

हो, आत्मा को ही देखने की आदत पड़ जाये, ऐसा अभ्यास हो। किससे भी मिलेंगे तो यहाँ ही देखेंगे, बात करेंगे तो भी यहाँ ही देखेंगे, यह पक्का हो। कोई बात हो गयी तो मैं हूँ ही बिन्दी तो वो बात वहीं खत्म हो जाती है।

बाबा शुरू से सभी बच्चों से बहुत प्यार करता है, सारे कल्प में ऐसा, इतना प्यार कोई नहीं कर पायेगा। तभी तो दिल से निकलता है इतना प्यार करेगा कौन...। इस प्यार के रिटर्न में अब सभी को समय प्रमाण यह पक्का होना चाहिए कि ब्राह्मण सो फरिश्ता सो देवता। चलते-फिरते, कार्य-व्यवहार में आते भी हमारी नज़र इन तीनों स्वरूप पर ही जानी चाहिए, इसके लिये बहुतकाल का अभ्यास चाहिए। जैसे अभी जापान में अचानक प्राकृतिक आपदा हुई, तो ऐसे समय पर प्रकृतिजीत बन मन्सा से सकाश देने की सेवा में सहयोग मिलेगा। बीमारों के लिये भी मन्सा सेवा का बहुत ही अच्छा साधन है तभी तो बाबा बार-बार कह रहा है मन्सा सेवा करो, सकाश द्वारा सहारा दो, सहयोग दो। तो पहले इस बात पर अटेन्शन दो, उसके लिए टाइम फिक्स करके यह सेवा करने का अभ्यास करना चाहिए क्योंकि अभी तमोगुणी मनुष्यों की वृत्ति भी बढ़ेगी, अशुद्ध फोर्स होगा, ऐसे समय पर बीजरूप हो करके, बिन्दी लगाने से लाइट ही लाइट दिखाई देंगे। बिन्दी लाइट है ना, तो अगर बिन्दी रूप का अभ्यास अभी से होगा तो कोई भी ऐसी अशुद्धि का बुरा असर हमारे ऊपर नहीं आयेगा। तो ऐसी हमारी प्रैक्टिस चाहिए, अन्त के समय यह सब ऐसी निगेटिव प्रभाव डालने की बातें बहुत आयेंगी, उस समय अगर हम ऐसी प्रैक्टिस में हैं, जो हमारे को कोई देख ही नहीं सके, लाइट ही लाइट देखे। शुरू में हम ऐसे दृश्य प्रत्यक्ष रूप में बहुत देखते थे, इसलिए बाबा अभी भी कह रहे हैं कि बिन्दू रूप बनो, बिन्दू रूप देखो, और बिन्दू बाबा को याद करो। तो इसी रीति यह अभ्यास और अनुभव अभी कर सकते हैं, इसमें प्रोग्रेस करते अपने को बाप समान बनाने में आगे बढ़ना है।

साकार में जब ब्रह्मा बाबा दृष्टि देता था तो बिन्दी ही बिन्दी देखने में आता था। लाइट स्वरूप में फरिश्ता दिखाई देता था, ऐसे हमारा भी वह स्वरूप हो जायेगा तब बाप समान बनेंगे। बाबा कहते हैं बच्चों ने मुझे दिल में बिठाया है और जब दिल में बाबा बैठा तो कोई भी विकर्म हो नहीं सकता, क्योंकि बाबा साथ में बैठा है। अगर सच्ची दिल से कहा बाबा, तो हज़ूर हाज़िर है मदद के लिए। हमारे दिल में दिलवाला बाबा बैठा है, तो हम सभी दिलवाला मन्दिर हो गये। प्यार की निशानी भी दिल ही होता है। तो हम भी अगर कहते हैं हमारा बाबा से प्यार है, इसमें तो सभी पास है क्योंकि बाबा ने कहा दिल के प्यार के बिना मेरी याद सहज नहीं आयेगी। कोशिश करेंगे शिवबाबा शिवबाबा,

फिर बीच में और संकल्प भी आ जायेंगे लेकिन एकदम बाबा कहें और बाबा हज़ूर हाज़िर हो जाये और हम उसी से बातें करें, उसी से बहलें... इतना प्यार हो बाबा से जो दिल में ही बिठाये। उसके लिये हमारी दिल यथार्थ विधिपूर्वक साफ हो, व्यर्थ संकल्प नहीं हो।

व्यर्थ संकल्प न चलें, उसकी दवाई है मन को बिजी रखो। व्यर्थ संकल्प भी पहले दिल में ही चलते हैं फिर मुख में आयेगा। तो मन का काम है संकल्प करना, तो मन को बिजी रखो। यह मन्सा सेवा भी खास मन को बिजी रखने के लिये है।

और आप सब ऐसे सिकीलधे हो जो आप बाबा को पसन्द आ गये हो तब तो बाबा की नज़र आपके ऊपर पड़ गयी। जहाँ से भी जिस भी मोहल्ले से आये होंगे उन पर बाबा की नज़र नहीं पड़ी, आपके सम्बन्धी कितने होंगे, वो बाबा को पसन्द नहीं आये, आप ही पसन्द आये क्यों? है नशा! मैं बाबा को पसन्द आया, मेरे ऊपर ही बाबा की नज़र पड़ी। तो बाबा का हमारे से कुछ एक्स्ट्रा लगाव है इसलिए मैं तो समझती हूँ यहाँ तो आप सब उड़ते रहते होंगे। या फिर कई ऐसे सोचते कि हम तो कोई खास काम के नहीं हैं, हम तो ऐसे ही हैं, हमको कौन पूछता है! बड़े तो बड़ों को ही देखते हैं लेकिन बाबा ने कहा कोई भी चीज़ बनाओ मानो खिचड़ी बनाते हैं उसमें नमक चाहिए, जीरा चाहिए सब चीज़ चाहिए। मानो नमक हमारे से भूल जाता है, है तो साधारण नमक की बात लेकिन वो खिचड़ी अच्छी बनेगी? कोई नहीं खायेगा, कहेगा अच्छी नहीं है। तो बाबा कहते एक एक आत्मा मेरे लिए जरूरी है, तभी तो बाबा ने इतना बड़ा संगठन बनाया है और आप उसमें रहे हुए हो, माना बाबा की नज़र है। तो कोई भी यहाँ आया है वह काम का है। अगर यहाँ कोई झाड़ू लगाने वाला भी न हो तो क्या आश्रम की भासना आयेगी। तो वो भी जरूरी है ना। तो हर काम का महत्व है। कोई ने पूछा कि इन्हें को ही बाबा ने क्यों पसन्द किया? और भी तो थे ना! तो बाबा कहते यही बच्चे मुझे कल्प पहले भी मिले थे, कल्प के बाद भी होंगे। तो कल्प-कल्प का कनेक्शन है। कल्प पहले वाले ही बाबा की नज़र में आये और बाबा ने अपना बना दिया। तो आप सभी कल्प पहले वाले हो, यह पक्का समझो। ऐसे नहीं, मैं तो हूँ ही यह... अपने आपको अभिमान भी नहीं, कम भी नहीं। नहीं तो कभी अभिमान आ जाता है कि हम ही सब-कुछ हैं या अपने को ऐसे समझते हैं कि हम कुछ नहीं हैं, तो व्यर्थ संकल्प बहुत चलते हैं इसीलिए आपको नशा होना चाहिए बाबा की नज़र मेरे ऊपर पड़ी, तो मेरे में कुछ है ना! तो बाबा ने हमको अपना बनाया है तो मेरी वैल्यु है। कल्प-कल्प का मैं ही अधिकारी हूँ तभी बाबा ने मुझे इस कल्प में भी बनाया है तो इतना नशा, अभिमान नहीं स्वमान हो।

तो अभिमान को छोड़ना है, स्वमान में रहना है। रोज़ कोई न कोई स्वमान याद रखो तो बहुत मज़ा आता है। हमेशा बिन्दी बिन्दी कहते रहो तो थोड़ा कॉमन लगेगा लेकिन कोई स्वमान सहित बिन्दू को याद रखेंगे, उस अनुसार अपने को करेंगे तो बहुत मज़ा आयेगा। व्यर्थ थॉट्स नहीं आयेंगे, क्योंकि व्यर्थ थॉट्स बहुत टाइम ले लेते हैं। और आप खाली होके जब बाबा की याद में बैठेंगे तो उस समय और ही स्पष्ट रीति से व्यर्थ के ख्यालात चलते रहेंगे। तो स्वमान को याद करके व्यर्थ संकल्प खत्म करो, मुरली में से कोई भी एक प्वाइन्ट आप अपने लिये, मनन के लिये रखो जरूर, होमवर्क आप अपने आप को दो या तो जो वरदान आता है या स्लोगन की एक लाइन ही याद रखने का होमवर्क अपने आपको देंगे तो अटेन्शन बार-बार जायेगा, मन को बिजी रखो। मन को फ्री नहीं रखो जो व्यर्थ संकल्प आवे। तो यह पुरुषार्थ हम लोगों को करना है।

जैसे देखो कोई बड़ी बीमारी आती है तो उसके पीछे कितना पड़ जाते हैं, जितनी भी पैथी हैं वो कुछ भी करके बीमारी चली जाये, उसके लिये पुरुषार्थ करते रहते हैं। एक दृढ़ संकल्प करते हैं बीमारी नहीं होनी चाहिए, इसके लिए उसके पीछे लग जाते हैं तो यह भी तो व्यर्थ संकल्पों की बीमारी है, इसको भी तो भगाना है ना! तो इतना दृढ़ संकल्प रखो कि मुझे करना ही है, बनना ही है। ऐसे नहीं चल रहे हैं, ठीक हैं, कामकाज किया रात पूरी हो गई, सो गये फिर सुबह को उठा, दिनचर्या प्रमाण योग में बैठे... ऐसे नहीं होना चाहिए। बाबा ने आपको सेवा के स्थान पर रखा है, बाबा की आपके ऊपर नज़र गई, आपको अपना बनाया तो यह कितना फखुर होना चाहिए और खुश रहना। खुशी कभी नहीं गँवाना। खुशी गई तो सब-कुछ गया। बाबा की मुरली में से खुशी की प्वाइन्ट अपने पास नोट करो और उस समय पढ़ो कि खुशी के लिये बाबा ने क्या क्या कहा है?

हम लोग शुरू शुरू में अपनी नोटबुक में ज्ञान, योग, धारणा, सेवा ऐसे इन चारों सबजेक्ट्स की प्वाइन्ट अलग-अलग लिखते थे। योग की बात हो तो योग में ही लिखते थे और अन्त में जब पाकिस्तान से आबू में आये, तो बाबा ने कहा वज़न बढ़ गया है इसलिए आपकी कॉपियां नहीं जायेंगी। हमारे लिए यह पेपर आया, हमने कहा कपड़े भले रह जायें बाकी कॉपियाँ तो हमारी जायेंगी। तो बाबा ने चतुराई क्या किया! बाबा ने एक स्थान पर बड़ा सा खड्डा खुदवाया और एक लोहे की बड़ी मोटी-मोटी पेटी मंगाई। बाबा ने कहा देखो, तुम्हारी यह कॉपियां सर्विस करेंगी। बाबा आपकी यह कॉपियां यहाँ दबाके जाता है, फिर द्वापर में आपकी यह कापियां कुछ न कुछ मिलेंगी और इससे ही शास्त्र बनेंगे। तो यह सेवा आप करेंगी या इन्हें आप खुद ही पढ़ेंगी? तो सभी तैयार

हो गये और कापियां वहीं छोड़कर आये।

तो आप भी अपने पास प्वाइंट्स नोट जरूर करो, बुद्धि में करो या कॉपी में करो लेकिन दिमाग इसी में ही चले। व्यर्थ संकल्प की आदत नहीं डालो, अगर व्यर्थ की आदत पड़ गई तो खुद ही तंग होंगे इसलिए मन को बिजी रखने के लिये अपनी दिनचर्या आपेही बनाओ, अपनी दिनचर्या ऐसी बिजी रखो जो व्यर्थ संकल्प चलने की मार्जिन ही नहीं रहे और अपने आपको खुश रखो क्योंकि खुशी सिर्फ अकेली नहीं जाती है, खुशी के लिये ही कहा जाता है खुशी जैसा कोई भोजन नहीं, खुशी जैसा कोई खज़ाना नहीं। तो सिर्फ खुशी नहीं जाती लेकिन हेल्थ वेल्थ भी साथ में जाती है इसीलिए खुशी कभी नहीं गँवाना, आपका

चेहरा सदा खुशनुमा होना चाहिए। आपको इतनी प्राप्तियाँ हैं तो आपकी शक्ल कैसी होनी चाहिए? मुस्कराती हुई। मुस्कराने वाले को देख मूँझा हुआ भी मुस्कराने लग जायेगा, तो यह भी सेवा हो जाती है। तो मुस्कराते रहो। कोई कोई ऐसे विचारों में होते हैं जैसे पता नहीं क्या इसको हो गया, बुखार हो गया या माथे में दर्द पड़ गया... शक्ल देखो रोने जैसी, ऐसे नहीं करो क्योंकि हमको प्राप्तियाँ बहुत हैं, तो हमारी शक्ल में मुस्कराहट हो। एक एक प्राप्ति को याद करो तो बहुत खुशी होती रहेगी। तो खुशमिजाज़ रह सदा मुस्कराते रहो तो बाबा देखके खुश हो जायेगा और आपको बधाई देगा। अच्छा, ओम् शान्ति।

दादी जानकी जी की अनमोल शिक्षायें

“आत्मा और शरीर दोनों को सतोप्रधान बनाना है तो दूसरों को देखने के बजाए बाबा ने जो किया वही करते चलो” (14-10-06)

हर पल जिसको बाबा की याद है, वो कहाँ रहते हैं? बाबा की पलकों में। भगवान का प्यार कितना वन्दरफुल है! इतना प्यार जो भगवान अपनी पलकों में बिठा दे। सारा दिन बुद्धि में ज्ञान टपकता रहे अर्थात् सारा दिन ज्ञान का चिंतन चलता रहे।

एक बाबा का प्यार, दूसरा परिवार से प्यार। परिवार से प्यार मांगो नहीं, मांगने से नहीं मिलेगा। बाबा से प्यार मिला तो यहाँ आ गये। बाबा को देख करके बी.के. बन गये। पता नहीं था इतनी परीक्षाएँ आयेगी, परन्तु भेंट नहीं करते हैं, दुनिया में कितनी परीक्षाएँ आती हैं। यहाँ की परीक्षा में घबरा जाते हैं, दुनिया में एक एक के अन्दर का हाल तो पूछो, बिचारों का क्या हाल है? उसकी भेंट में यहाँ कुछ भी परीक्षा नहीं है।

परिवार से प्यार पाने के लिए आप खुद ज्ञान स्वरूप, शान्ति स्वरूप, प्रेम स्वरूप, आनन्द स्वरूप, शक्ति स्वरूप बनो। यह फाउण्डेशन जिसका जितना मजबूत है तो वो प्यार मांगता नहीं है। मांगने वाला प्यार आर्टीफिशियल है। ऑटोमेटिक ईश्वर जितना प्यार कोई दे नहीं सकता। मैं हमेशा अपने से पूछती हूँ मेरे जीने का परपज़ क्या है? मेरी पर्सनल लाइफ में क्या फायदा है? और मेरे से औरों को क्या फायदा है? ब्रह्मा बाबा की पर्सनल लाइफ में तो हमने रोज़ नवीनता

देखी, अव्यक्त स्थिति देखी। अभिमान का अंश नहीं था। प्यार तो हर बच्चे के साथ था, पर अटैचमेन्ट नहीं था। जो कुछ हुआ ड्रामा पूरा हो गया। कोई सीन सामने आयी तो नर्थिंग न्यु, ब्रह्मा बाबा की इतनी अचल अडोल अवस्था देखी। बाबा को हर समय तपस्या में देखा, त्यागी नम्बरवन। सिम्पल और सच्चा रहना - यह ब्रह्मा बाबा ने प्रैक्टिकल सिखाया। उसने कहा तुमको ऐसा बनना है, इसको फॉलो करो। और इसने कहा ऐसा बनना है तो उसको याद करो। तो प्रैक्टिकली साकार बाबा से हमको जो मिला है वही आज भी मैं याद करती हूँ, वही करती हूँ।

हर संकल्प और श्वास में बाबा के सिवाए और कोई की बात याद आती नहीं। देखो, कमाल ऐसी याद करना नहीं पड़ता है, बाबा को देखा तो और कुछ याद आता नहीं है। ड्रामा में अभी जो सेवा हुई फिनिश। अपने स्मृति स्वरूप से याद दिलाने की पालना दी है, सेवा नहीं की है। प्राप्ति बता रही है पालना, पढ़ाई कैसे की है? प्राप्ति बताती है कि मुझे पालना किसकी मिली है? ईश्वरीय पढ़ाई जो पढ़ी है जो सुना है, समाया है वो जीवन में आया है। हमारे जीवन के अनुभव से औरों को मिल रहा है। वन्दर है यह प्राप्ति कितनी है? तो अनुभव ऐसा हो जो अनेक आत्माओं को उस अनुभव की शक्ति मिलती रहे।

हर रोज़ की मुरली में बाबा कुछ ऐसा सिखा देता है, हमारा बेड़ा तो बाबा ने पार किया परन्तु अभी हमारे संग में जो आवे, वो भी इस सच की नईया में बैठे तो उनका भी बेड़ा पार हो जाये। बाबा के गुण गाते हंसते-हंसते यह जीवन बीते। जो बाप की महिमा है वो बच्चों की होनी चाहिए, तो बाबा की महिमा करते-करते, उसको देखते-देखते उस जैसा बनेंगे।

बाबा महिमा चाहता नहीं है पर अनेक आत्माओं को जब प्राप्ति होती है तो उसके दिल से महिमा निकलती है। तो अब कोई व्यर्थ बात सुनने की जरूरत नहीं है। हाँ, बाबा के जो बोल हैं वो बोल सकते हैं बाकी तो कुछ बोलना ही नहीं आता है। सुनने वाले थकते नहीं हैं, यह भी मेहरबानी है। अगर हमारे में जरा भी अभिमान होगा तो कोई सुनेगा नहीं। अच्छा।

दादी प्रकाशमणि जी के अमृत वचन “समर्पित भाईयों की भट्टी में दादी जी का धारणायुक्त क्लास”

(8-8-87)

हम आप सबने इस प्यारे संगमयुग पर अपने आपको मीठे बाबा के आगे समर्पित किया। सिर्फ मन्सा या बुद्धि से नहीं परन्तु प्रैक्टिकल में अपनी जीवन को हथेली पर रखकर बाबा के आगे अर्पित कर दिया। संन्यासी संन्यास करते उनके मन में वैरागवृत्ति होती, वह अलग बात है। आप सब बेहद के डबल संन्यासी हो, डबल सर्टीफिकेट लेने वाले हो। आप सबको इस संगम का डबल सौभाग्य मिला हुआ है। आपको इस ड्रामा में डबल पार्ट है, डबल कमाई है, डबल लॉटरी है, डबल पालना है क्योंकि आप डबल सेवाधारी हो। आप अपने को दृढ़ करके महावीर बन युद्ध के मैदान पर आये हो।

आप सबका महान त्याग है। जिस घड़ी अपने आपको अर्पित किया- तो यह दृढ़ संकल्प किया कि ओ बाबा हम आपके घर में मर मिटेंगे परन्तु हटेंगे नहीं। सदा विजयी बनेंगे कभी हारेंगे नहीं। आपके द्वार पर हम अपना श्वास-श्वास सफल करेंगे। कहाँ भी अपना श्वास व्यर्थ नहीं गँवायेंगे। हर कदम पर आपका आज्ञाकारी बनकर रहेंगे। कदम-कदम श्रीमत पर चलेंगे। तो आप सब हो महान त्यागी। पाण्डवों का यह त्याग शक्तियों से भी बड़ा है। शक्तियाँ अनेक हैं। पाण्डव विरले हैं। आप सब देहअभिमान छोड़कर निर्माण सेवाधारी बनें- तो आपकी मार्क्स शक्तियों से भी ज्यादा हैं इसलिए पाण्डवों का पति पाण्डवों का साथी है, शक्तियों का रखवाला है, पाण्डवों का साथी है। शक्तियों को उसने आगे रखा, यह उनकी बलिहारी है, थैंक्स हैं। लेकिन पाण्डवों का सदा साथी है इसलिए आप सब महान हो जिन्होंने यह दिल में संकल्प किया कि हमें मोल्ड होकर

रहना है। मुड़कर पीछे नहीं देखना है। यह सब मार्क्स आप सबको एक्स्ट्रा मिल रही हैं।

प्रवृत्ति में रहने वाले सीढ़ी चढ़ने के बाद उतरते हैं परन्तु आप लोगों ने अपने को सिद्ध किया कि हम बाल ब्रह्मचारी बाबा के बच्चे हैं। यह बाल ब्रह्मचारी रहना भी रिकार्ड है। आप लोगों ने दृढ़ संकल्प किया कि हमें सीढ़ी चढ़नी ही नहीं है। और जो चढ़ चुके हैं उनको देखना भी नहीं है। यह भी बहुत बड़ा त्याग है तो आप डबल त्यागी हैं। अगर वह चढ़ी हुई सीढ़ी देखने में आती तो पूरे त्यागी नहीं। देखनी भी नहीं है यह मंजिल। दिखाई पड़ती है तो यह कमी है। अगर चढ़ी हुई सीढ़ी दिखाई पड़ती, वह संकल्प भी आता तो समझो हम अभी तक ज्ञानी व योगी तू आत्मा की स्टेज से दूर हैं इसलिए यह सर्टीफिकेट लेना है कि हम कोई देहधारी को देखते नहीं। हमारे इन नयनों में एक बाबा की ही ज्योति जगती। तो अपने आपको चेक करो कि मुझे कोई भी हस्ती सूक्ष्म में भी आकर्षित करती है? या मैं सर्व आकर्षणों से परे आकर्षित रूप हूँ। मेरी बुद्धि कहाँ किसी पर सूक्ष्म में भी आकर्षित तो नहीं होती? मिसाल बताते हैं कि लक्ष्मण ने 14 साल सीता के साथ वन में बिताया परन्तु उसने सीता के अंगूठे के सिवाए उसको कभी देखा ही नहीं। यह भी मिसाल है, ऐसे नहीं कि उसने देखा ही नहीं परन्तु देखते भी नहीं देखा। तो जब हमारे चन्द्रवंशी क्षत्रिय घराने का लक्ष्मण कहता कि हमने कभी सीता को देखा ही नहीं। तो हम सूर्यवंशी में आने वाले कैसे कह सकते कि हमें कोई दिखाई पड़ता। अगर कोई दिखाई पड़ता तो समझो मैं द्वापर वाला हूँ न कि सूर्यवंशी हूँ। यही है सबसे पहली मंजिल। अच्छा। ओम् शान्ति।